P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

एस. आर. हरनोट की कहानी 'दीवारे' में गिरते मानव–मूल्य

गुरूप्रीत कौर
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा,
पंजाब, भारत

सुरजीत सिंह
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा,
पंजाब, भारत

सारांश

एस.आर.हरनोट पर्वतीय सामाजिक समस्याओं पर कहानियॉ लिखने वाले एक प्रतिभाशाली कथाकार है। उनकी कथाओं में जातीय विभाजन, संस्कृति संक्रमण, पर्यावरण प्रियता आर्थिक मंदहाली, मूल्यों का ह्रास, परम्परा में रहते हुए सकारात्मक बदलाव आदि गल्प रचनाएँ है। इनकी कहानियों में पीढ़ियों के बीच अंतराल के साथ–साथ गॉव और शहरों के बीच अंतराल, संस्कारों की भिन्नता, शहर और गॉव के अस्तित्व के बीच घटित सांस्कृतिक विघटन का सच, पारिवारिक स्तर पर एक दूसरे से दूर होते आदमी, परिवार का चित्रण किया गया है। शोध लेखन के माध्यम से कहना चाहती हूं कि शहरों और पश्चिमी रंगत के कारण जो परिवार में दरार आ रही है। मानव मूल्य संक्रमित हो रहे है इसके नतीजे अच्छे न होंगे क्योकि अपनी संस्कृति, सभ्यता, रीति – रिवाजों, कदरों–कीमतो को भूल किसी ओर के मूल्यों को अपनाना गलत है। हमें भविष्य में इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

मुख्य शब्द : हरनोट, नैतिकता, मानव–मूल्य, समस्या।

प्रस्तावना

एस. आर. हरनोट जी की कहानियॉ सामाजिक सांस्कृतिक विमर्श का आईना है। हरनोट जी अपनी कथ्य सरंचना में परंपरागत, आधुनिक या उतर आधुनिक सोच को विशेष निर्मित करने की बजाए परंपरा और आधुनिक वैश्विक संस्कृतिक अनुकूलता से सहज–असहज जिंदगी की गलियों के बीच से होते हुए अपने समय के संकट से परिचित ही नहीं कराते अपितु परिवेशगत परिस्थितियों के बीच से ही संकट का समाधान भी प्रस्तुत करते है। उनकी कहानियों को पढ़कर हम यह बात स्पष्ट रूप से कह सकते है कि उनकी कहानियॉ गहरे स्तर तक मानवीय संवेदना में लिप्त है। गहरी जनधर्मी चेतना और सहजता भी। उनकी सभी कहानियॉ सबसे अलग महत्व रखती है। उनकी कहानियों के पात्र भले ही शांत हो और कोई अधिक शोर शराबा नहीं करते किन्तु पाठक के मन को गहरे अर्थो में छू लेते हैं। उनकी कहानियॉ सामाजिक समस्याओं को पेश करती है और मानवीयता का पाठ पढ़ाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधकार्य का उद्देश्य 21 वीं सदी के मानव मूल्यों को ह्रास का अध्ययन करना हैं। आज का मानव अपने संस्कारों को भूल चुका है।

एस. आर. हरनोट की कहानी 'दीवारे' में गिरते मानव–मूल्य

अनेक पक्षों वाला शब्द 'मूल्य' अर्थ के अनंत भूतल पर ख्यात है। संस्कृत भाषा के अंतगर्त 'मूल्य' शब्द की व्युत्पति 'मूल' धातु में 'यत्' प्रत्यय के योग से मानी जाती है। अंग्रेजी भाषा मे 'मूल्य' के स्थान पर 'Value' शब्द है। जिसकी व्युत्पति लैटिन भाषा के 'Valere' से मानी जाती है। अंग्रेजी हिंदी कोश में 'Value' शब्द के मूल्य, मान, मान्यताएँ, दाम, भाव, गरिमा, महत्व, आदि अर्थ ग्रहीत होते है। समाज मनुष्य के समुच्चय से मिलकर बनता है। परस्पर विरोधी प्रवृतियों वाले व्यक्तियों की इच्छाओं, आशाओं एवं सोच में परस्पर नकारात्मक संबंध होता है। परस्पर टकराव की समस्या के निदान रूप में मूल्य गवेषणा की जाती है। मूल्य समाजकृत मूलभूत पैमाने होते है। जिनका उद्देश्य व्यक्ति विशेष का मंगल न होकर समष्टि का कल्याण है। समाज की कसौटी पर खरी उतरने वाली मनुष्य की इच्छाएँ भावनाधारित आकृतियॉ एवं घटनाएं ही मूल्य होने की गरिमा प्राप्त करती हैं। सामाजिक संबंधो एवं समाजानुकूल वातावरण के निर्माणकारी तत्व ही मूल्य कहलाते है। मूल्यों का निर्माता, भोक्ता एवं विकासकर्ता समस्त समाज होता हैं। मूल्य ही समाज को नियन्त्रित, व्यवस्थित, संचालित एवं विकसित करते हैं।

भारतीय संस्कृति की आधारशिला मानव मूल्यो पर टिकी हुई है। समाज अथवा राष्ट्र की उन्नति भौतिक संसाधनो पर ही नही, अपितु उस राष्ट्र के नागरिकों द्वारा व्यवहत मूल्यों पर भी आधारित होती है। वर्तमान में तीव्र गति से आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन भी मूल्यों को प्रभावित करता है। जिस वजह से मूल्यों में टकराव, संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई देने लगी है। इन्हीं मूल्यों के पतन अथवा यह कहे कि मूल्यों के संक्रमण के कारण अनेक समस्याएँ पनप रही है। जैसे – हिंसा, आंतकवाद, नशीले पदार्थो का सेवन, भ्रष्टचार, परिवारिक बिखराव, सुख सुविधाओं की लिप्सा में दिग्भ्रमित मानव समाज में गिरते हुए मूल्यों के ही दुष्परिणाम हैं।

ज्यों–ज्यों हम आधुनिक युग में प्रवेश करते गए त्यों–त्यों ही मनुष्य ने अपने मूल्यों को त्याग्ना आरंभ कर दिया। इस प्रकार एक तरह का सांस्कृतिक संकट मंडराने लगा है हमारी भारतीय संस्कृति पर। हम अपनी सभ्यता को छोड़ पश्चिमी सभ्यता की आड़ में लूटते चले जा रहे हैं। इन्ही सब समस्याओं से घिरे हुए है एस. आर. हरनोट की कहानियों के पात्र भी। वो भी अनगिनत सम्सयाओं के कारण त्रासदी भरा जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर है। हरनोट जी की कहानी 'दीवारें' में भी ऐसी ही परिस्थितियों का ज़िक्र किया गया है। इस कहानी का मुख्य पात्र दादा मनीराम जिस के दो पुत्र और एक पुत्री है। दोनों बेटों में से एक तो शहर में नौकरी करता है तथा दूसरा गॉव में अपने पिता के साथ ही रहता है। छोटा बेटा जो गॉव में रहता है वो पूरा दिन शराब के नशे मे मस्त रहता है। कोई काम–धंधा मिलता नहीं अगर मिलता भी है तो उसकी करतूतों की वजह से वो भी छूट जाता है।

"छोटा बेटा गॉव में ही रहता है। विवाह के बाद उसका हाल भी ठीक नहीं है। काम धाम कुछ नहीं करता। पहले सड़क पर बेलदार का काम करता था, पर अपनी करतूतों से वह भी जाता रहा। दारू के नशें में एक दिन दोपहर बाद सड़क पर पहुंचा। वहां सुबह से ही एस. डी.ओ. चैकिंग पर था। बजाय इसके कि चुपचाप कहीं निकल लेता, पूछने पर सीधा एस. डी.ओ. से ही उलझ गया। फिर क्या था, उस दिन के बाद ध्याड़ी भी जाती रही। उसके बाद कहीं किसी काम पर उसके पैर नहीं जमें।''

पीढ़ियों के बीच के अन्तराल को रेखांकित करती हुई कहानी है यह। शहर और गॉव के अस्तित्व के बीच घटित संस्कृतिक विघटन का सच, पारिवारिक स्तर पर एक दूसरे से दूर होते आदमी का खामोशी से बर्दाशत किया जा रहा त्रासद, अंधसंघर्ष की गाथा है यह कहानी। 'दीवारे' में भी यह कुशलता पूर्वक दिखाया गया है कि एक पुत्र जिसके साथ उसके माता–पिता के सपने जुड़ें हुए है कि वह पढ़–लिखकर बड़ा अफसर बनेगा और हम उसकी धूमधाम से सभी ग्रामवासियों की उपस्थिति में शादी करेंगे, सब कुछ धरा–धराया रह गया है। शादी तो दूर की बात वह तो अपने माता–पिता का हाल जानने की कोशिश भी नहीं करता। उसने अपने साथ ही कार्यरत महिला से प्रेमपाश के कारण शादी रचा ली है और अब वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ शहर में ही रहता है। उसे यह ज्ञात नहीं कि उसका परिवार किन हालातों से गुजर रहा है वो कैसे गॉव मे रह रहे है। गांव से शहर में स्थानांतरण क्या किया वो सभी को भूल गया। अपनी मां की मृत्यु के पश्चात् वह बँटवारे के लिए अपने गॉव, अपने घर आता है किन्तु एक अनजान शख्श की तरह। किसी से घर में कोई बातचीत नहीं करतां यहां तक कि वो अपना खाना भी अलग बनाते है। उसकी दृष्टि पिता की जमीन पर ही न होकर अपितु अपनी मृत मॉ के आभूषणों पर भी टिकी हुई है। मनीराम जब अपनी मृत पत्नी के गहनों को बँटवारे के लिए आगे रखता है तो साथ ही एक दराट् भी रख देता है। अपने शहर वासी पुत्र से कहता है कि बेटा मुझे भी इस दराट से आधा – आधा बॉट लो। बेटा यह सुनकर उदास हो जाता है और अपनी मृत मॉ की स्मृति में खोया, आँसू बहाता हुआ गहनों को उठाकर अपने पिता की जेब में ठूँस देता है और अंदर चला जाता है।

''दादा सीधा भीतर जाता है। दरोठी खोलता है। बरागर और बालू निकालकर अपनी जेब में भरकर बाहर आता है तो हाथ में दराट भी है। देख कर बड़ा बेटा और पंचायत सकते में पड़ जाते है।

तीनों गहने लाल रूमाल में बँधे है।.....

.....वह दराट बेटे को थमा देता है।

''मेरा हिस्सा भी तो बाकी है बेटा,

दो बेटे है मेरे।

तेरी मां नहीं है। होती तो हम एक – एक दोनो में बंट जाते। दराट तेरे हाथ में है। सोच ले मेरा कौन सा हिस्सा चाहिए तुझे। जब हिसाब होना ही है तो पूरी तरह से हो।''

नगरीकरण के फलस्वरूप पढ़ लिखकर युवक, युवतियॉ ग्रामीण जीवन की सादगी भरी जिंदगी की अपेक्षा नगर की चकाचौंध और आधुनिकता के नाम पर खान–पान, वेशभूषा, आचरण – व्यवहार में पश्चिमी रंग में ढलना ज्यादा पसंद करते है। इसी तरह दादा मनीराम के बड़े बेटे की बेटी की पश्चिमी रीति की वेशभूषा को देखकर छोटे बेटे की बेटी ने अपने बालों को दराट से काटकर और अपने कपड़ो को काटकर अपने ताया की बेटी की भांति पश्चिमी रंग की वेशभूषा अपनाकर अपनी बहन के साथ खेलना चाहती है।

''दादू, दादू देख न, मैं दीदी जैसी लग रही हूं क्या?''

दादा की तन्द्रा टूटती है। पोती को देखता है तो हक्का बक्का रह जाता है। उस ने अपनी सलवार नीचे से काटकर घुटनो तक छोटी कर दी है। लम्बे बाल दराटी से काट कर कान तक छोटे कर दिए हैं। अपने कुरते की बाहों को काटकर कंधे तक छोटा कर दिया है। कुरते का गला इतना काट दिया है कि उसकी नन्ही–नन्हीं उगती छातियां दिख जाए। वह आधे पेट पर झूल रहा है। वह अपनी शहर की बहन जैसी अधनंगी हो गई हैं। मन में यही सपनें लिए कि अब तो वह उससे खेलेगी। बोलेगी।''

निष्कर्ष

कहानीकार हरनोट ने इस कहानी में आधुनिकता परिणामत युवापीढ़ी की संवेदन रिक्कता ज़िम्मेदारी की त्रुटि, भौतिकता की जगमगाहट में व्यक्तिगत प्रयोजन की

परितृप्ति तक केन्द्रति रहने की स्थितियों को चित्रित किया गया है। नगरीय निरंकुशता और पहनावे की पश्चिमी रंगत गांव की पीढ़ी को प्रभावित करती है, इस ओर भी कहानी इशारा करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह राकेश कुमार – अतिपरिचित के भीतर अर्थ की पहचान–पक्षधर पृ. 289
मीणा सुरेश चन्द – पर्यावरण और मानवीयता की कहानी–उम्मीद पृ.
वामन शिवराम आप्टे – संस्कृति हिन्दी कोश पृ. 812
बुल्के कामिल – अंग्रेजी हिंदी कोश पृ. 817
हरनोट एस. आर. – दीवारें पृ. 138
श्रीकान्त श्रीनिवास – कथा त्रिकोण – पृ. 92
साहित्य के आस्वाद – प्रकृति, पर्यावरण और मनुष्यता की चिंता की कहानियॉ पृ 168
हरनोट एस. आरा. – दीवारें पृ. 146–147
साहित्य के आस्वाद – प्रकृति, पर्यावरण और मनुष्यता की चिंता की कहानियॉ पृ. 169
हरनोट एस. आर. – दीवारे पृ. 148